

बटुक भैरव चालीसा

दोहा 1

विश्वनाथ को सुमिर मन, धर गणेश का ध्यान।
भैरव चालीसा रचूं, कृपा करहु भगवान॥

दोहा 2

बटुकनाथ भैरव भजूं, श्री काली के लाल।
छीतरमल पर कर कृपा, काशी के कुतवाल॥

चौपाई 1

जय जय श्रीकाली के लाला।
रहो दास पर सदा दयाला॥

चौपाई 2

भैरव भीषण भीम कपाली।
क्रोधवन्त लोचन में लाली॥

चौपाई 3

कर त्रिशूल है कठिन कराला।
गल में प्रभु मुण्डन की माला॥

चौपाई 4

कृष्ण रूप तन वर्ण विशाला।
पीकर मद रहता मतवाला॥

चौपाई 5

रुद्र बटुक भक्तन के संगी।
प्रेत नाथ भूतेश भुजंगी॥

चौपाई 6

त्रैल तेश है नाम तुम्हारा।
चक्र तुण्ड अमरेश पियारा॥

चौपाई 7

शेखरचंद्र कपाल बिराजे।
स्वान सवारी पै प्रभु गाजे॥

चौपाई 8

शिव नकुलेश चण्ड हो स्वामी।
बैजनाथ प्रभु नमो नमामी॥

चौपाई 9

अश्वनाथ क्रोधेश बखाने।
भैरों काल जगत ने जाने॥

चौपाई 10

गायत्री कहैं निमिष दिगम्बर।
जगन्नाथ उन्नत आडम्बर॥

चौपाई 11

क्षेत्रपाल दसपाण कहाये।
मंजुल उमानन्द कहलाये॥

चौपाई 12

चक्रनाथ भक्तन हितकारी।
कहैं त्र्यम्बक सब नर नारी॥

चौपाई 13

संहारक सुनन्द तव नामा।
करहु भक्त के पूरण कामा॥

चौपाई 14

नाथ पिशाचन के हो प्यारे।
संकट मेटहु सकल हमारे॥

चौपाई 15

कृत्यायू सुन्दर आनन्दा।
भक्त जनन के काटहु फन्दा॥

चौपाई 16

कारण लम्ब आप भय भंजन।
नमोनाथ जय जनमन रंजन॥

चौपाई 17

हो तुम देव त्रिलोचन नाथा।
भक्त चरण में नावत माथा॥

चौपाई 18

त्वं अशतांग रुद्र के लाला।
महाकाल कालों के काला॥

चौपाई 19

ताप विमोचन अरि दल नासा।
भाल चन्द्रमा करहि प्रकाशा॥

चौपाई 20

श्वेत काल अरु लाल शरीरा।
मस्तक मुकुट शीश पर चीरा॥

चौपाई 21

काली के लाला बलधारी।
कहाँ तक शोभा कहूँ तुम्हारी॥

चौपाई 22

शंकर के अवतार कृपाला।
रहो चकाचक पी मद प्याला॥

चौपाई 23

काशी के कुतवाल कहाओ।
बटुक नाथ चेटक दिखलाओ॥

चौपाई 24

रवि के दिन जन भोग लगावें।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावें॥

चौपाई 25

दरशन करके भक्त सिहावें।
दारुड़ा की धार पिलावें॥

चौपाई 26

मठ में सुन्दर लटकत झावा।
सिद्ध कार्य कर भैरों बाबा॥

चौपाई 27

नाथ आपका यश नहीं थोड़ा।
कर में सुभग सुशोभित कोड़ा॥

चौपाई 28

कटि घूँघरा सुरीले बाजत।
कंचनमय सिंहासन राजत॥

चौपाई 29

नर नारी सब तुमको ध्यावहिं।
मनवांछित इच्छाफल पावहिं॥

चौपाई 30

भोपा हैं आपके पुजारी।
करें आरती सेवा भारी॥

चौपाई 31

भैरव भात आपका गाऊँ।
बार बार पद शीश नवाऊँ॥

चौपाई 32

आपहि वारे छीजन धाये।
ऐलादी ने रूदन मचाये॥

चौपाई 33

बहन त्यागि भाई कहाँ जावे।
तो बिन को मोहि भात पिन्हावे॥

चौपाई 34

रोये बटुक नाथ करुणा कर।
गये हिवारे में तुम जाकर॥

चौपाई 35

दुखित भई ऐलादी बाला।
तब हर का सिंहासन हाला॥

चौपाई 36

समय ब्याह का जिस दिन आया।
प्रभु ने तुमको तुरत पठाया॥

चौपाई 37

विष्णु कही मत विलम्ब लगाओ।
तीन दिवस को भैरव जाओ॥

चौपाई 38

दल पठान संग लेकर धाया।
ऐलादी को भात पिन्हाया॥

चौपाई 39

पूरन आस बहन की कीनी।
सुख चुन्दरी सिर धर दीनी॥

चौपाई 40

भात भरा लौटे गुण ग्रामी।
नमो नमामी अन्तर्यामी॥

समापन दोहा 1

जय जय जय भैरव बटुक, स्वामी संकट टार।
कृपा दास पर कीजिए, शंकर के अवतार॥

समापन दोहा 2

जो यह चालीसा पढ़े, प्रेम सहित सत बार।
उस घर सर्वानन्द हों, वैभव बढ़ें अपार॥